25/06/2021

B.A Subsidary Paper II

Page No.: 1

Q. नातेदारी की परिभाषा दें तथा जनजातीय समाज में नातेदारी के महत्व की विवेचना करें।

Define Kinship and discuss the importance of Kinship in tribal Society.

Ans समाज सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्था का नाम है और व्यक्ति अभिनेता है जो इन संबंधों की स्थापना का निर्वाहन करता है। चूंकी समाज में अनेक प्रकार के संगठन और समूह पाये जाते हैं इसलिए सामाजिक संबंधों में विविधता का होना नितांत स्वाभाविक है। अनेक सामाजिक संबंधों में रक्त पर आधारित मानव संबंध अत्यन्त शक्तिशाली और महत्वपूर्ण होते हैं।

नातेदारी की परिभाषा - विभिन्न विद्वानों ने नातेदारी की परिभाषा निम्न रूप से दी है -

मजुमदार तथा मदन के अनुसार "सभी समाजों में मनुष्य विभिन्न प्रकार के बंधनों से समूहों में बंधे हुए होते हैं। इन बंधनों में सबसे अधिक सार्वभौम और सबसे अधिक मौलिक बंधन है जो कि संतानोत्पत्ति पर आधारित है, जो कि आंतरिक मानव प्रेरणा है वह नातेदारी कहलाती है।"

चार्ल्स विनिक के अनुसार "नातेदारी व्यवस्था कल्पित तथा यथार्थ आनुवंशिक बंधनों पर आधारित समाज स्वीकृत समस्त संबंधों को सम्मिलित कर सकती है।"

लेवी स्ट्रास के अनुसार "नातेदारी व्यवहार कल्पित तथा यथार्थ सामाजिक बंधनों पर आधारित समाज स्वीकृत लैंगिक वंश, रक्त या कर्म विषयक गुणों में जो व्यक्ति को प्राप्त होते हैं, निहित नहीं होती। वह मनुष्य की चेतना में विद्यमान रहती है। यह विचारों की एक स्वतंत्र प्रणाली है, न कि वास्तविक स्थिति का स्वतः विकास।"

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि नातेदारी समाज में पायी जाती है, सामाजिक संबंधों की यह स्वीकृत व्यवस्था है और या तो यथार्थ वंशानुगत संबंधों पर आधारित होता है या कल्पित पूर्वजों पर।

नातेदारी के महत्व - प्रत्येक समाज में नातेदारी को बहुत महत्व प्राप्त है, जिसकी चर्चा निम्न रूप से की जा सकती है -

(1) विवाह एवं परिवार का निर्धारण - किस प्रकार के विवाह को मान्यता प्रदान की जाती है किसे निषिद्ध और किसे अधिमान्य इसका निर्धारण नातेदारी द्वारा किया जाता है। रक्त एवं विवाह संबंध पर आधारित सदस्य परिवार में पाये जाते हैं। दोनों प्रकार के सदस्यों को नातेदार कहा जाता है। परिवार का विस्तार नातेदारी का विस्तार है। परिवार के प्रकार विभिन्न नातेदारी की -

भूमिका में पाये जाने वाले अंतर को स्पष्ट करते हैं। इसी कारण रेडक्लिफ ब्राउन ने कहा है कि नातेदारी व्यवस्था का मुख्य कार्य विवाह तथा परिवार के रूप को व्यवस्थित करना है।

(2) वंश, उत्तराधिकारी एवं शक्ति का निर्धारण - नातेदारी व्यक्ति की वंशावली का निर्धारण करता है। व्यक्ति अपने वंश संबंधियों की जानकारी प्राप्त कर यह समझता है कि वह इतिहास विहीन नहीं है। केवल वंश के इतिहास की ही जानकारी इसके द्वारा नहीं मिलती बल्कि नातेदारों की संख्या के आधार पर एक विशेष वंश की शक्ति का भी मूल्यांकन किया जाता है। व्यक्ति की सम्पत्ति एवं पद का हस्तान्तरण किन-किन लोगों में होगा, कौन-कौन इसके दावेदार होंगे इसका निर्धारण भी नातेदारी द्वारा ही किया जाता है।

(3) सामाजिक दायित्वों का निर्वाह - सामाजिक दायित्वों का निर्वाह भी नातेदारी करता है। सभी एक ही रक्त के होते हैं इस कारण बिना किसी स्वार्थ के सभी एक दूसरे के प्रति असीमित उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हैं।

(4) आर्थिक हितों की सुरक्षा - व्यक्ति नातेदारी के कारण कभी भी अपने को अकेला और असहाय नहीं समझता। इसका कारण यह है कि वह जब भी कठिनाई या आर्थिक-

संकट में होता है तो उसे सभी प्रकार की सुविधाएँ और सुरक्षा नातेदारी द्वारा दी जाती है। इस लिए यह कहा जाता है कि आर्थिक संकट के समय नातेदारी ही एक व्यक्ति को आश्रय देता है और उसकी मदद करता है।

(5) मानसिक संतोष - व्यक्ति परिचित पर विश्वास करता है और अपरिचित से डरता है। रक्त संबंधी सबसे अधिक परिचित व्यक्ति होते हैं अतः व्यक्ति नातेदारी के बीच अपार मानवीय आनन्द प्रसन्नता और सन्तोष का अनुभव करता है।

(6) मानवशास्त्रीय ज्ञान का आधार - मानवशास्त्रियों ने अधिकांश अध्ययन नातेदारी से ही शुरू किये। अनेक मानवशास्त्रियों ने नातेदारी के विभिन्न पक्षों का अध्ययन कर मानवशास्त्रीय ज्ञान को समृद्ध बनाया। मानवशास्त्र में अध्ययन हेतु इसके आधार पर मॉडल भी विकसित हुए जिनका उपयोग नातेदारी तंत्रों को समझने के लिए किया गया।

=

Vijant Kumar Mishra
Asst Professor (Guest Faculty)
Dept of Sociology
25/06/2021